आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 5/अंक 3/अगस्त 2025
Received: 16/06/2025; Accepted: 19/08/2025; Published: 28/08/2025

कहानी

सुनैना

डॉ. अजय कुमार

मो.नं.-8340596521

ई.मेल : ajaybro1320@gmail.com

डॉ. अजय कुमार , सुनैना, आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 5/अंक 3/अगस्त 2025**,(212-217)

https://doi.org/10.5281/zenodo.17072873

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

.........ठीक है!

पीठ पर गमछा से बच्चे को बाँधते हुए बोली।

बच्चा हँस रहा है।

अरे ! सुमति चलना नहीं है काम पर। चलना है बिमला, देखती नहीं इस बदमाश को अच्छे से बाँध देती हूँ...... नहीं तो फिर गिर जाएगा।

ये हरीश ठेकेदार बहुत हरामी...... है। बिमला बोली।

वो कैसे? सुमति कही।

औरतों को गंदी नजर से देखता है, हमेशा ताड़ता रहता है।

ताड़ना मर्द जात की जात.... है। सुमति बोली।

अरे...... उन सब पर ध्यान क्यों देती हो, सही से रहना है, अपना काम करना है और पैसा लेना है, ज्यादा सोचोगी तो.... हो गयी बच्चों की परवरिश।

दोनों हरीश की कोयला खदान में मजदूरी करती है।

आ..... गयी दोनों 10 मिनट लेट हो। हरीश बोला।

10 मिनट नहीं.... मालिक 2 मिनट लेट हैं। सुमति बोली

सुमति दसवीं पास है।

शाम को घर लौटती है और देखती है कि सुनीता रो रही है....। क्या हुआ, क्यों रो रही हो....? सुमति बोली।

बापू ने मारा..... माई। अमन को पीठ से उतारते हुए वहीं जमीन में बैठा दिया और कहा देखना इसे। गुस्से से तमतमाते हुए आंगन से निकली। सुनील अक्सर मुरली की देशी शराब ठेका में शराब पीता है। वहाँ पहुँची और देखा कि सुनील बैठकर शराब पी रहा है और जुए खेल रहा है।

बेशरम! औरत की कमाई खा रहा है। दिन-रात पीता रहता है। कड़ी मेहनत करके एक-एक पैसा जोड़ रहे हैं, बच्चों की अच्छे भविष्य के लिए और तू..... वही पैसा उड़ा रहा है.... दारू-जुए में। साला..... हरामी!

अपनी चिंता नहीं है तो बच्चों की चिन्ता कर। तुमने कसम खायी थी कि अब दारू-जुए हाथ न लगाऊँगा..... ये कहती जा रही और रोती जा रही है। सुनील दो दिन पहले ही कसम खायी थी कि अब कभी भी शराब-जुआ हाथ न लगाऊँगा।

सुनील और सुमति दोनों लव-मैरिज किया था। सुनील और सुमति दोनों एक-दूसरे से बेहद प्यार करते थे। दोनों एक ही स्कूल में पढ़ते थे। बोर्ड एग्जाम के बाद दोनों ने शादी की थी। सुनील दसवीं फेल था। दोनों साथ जीने-मरने की कसमें खायी थी।

सुनील होनहार एवं मेहनती लड़का था। अच्छा काम भी करता था, लेकिन खराब संगति और आदतों ने उसे बिगाड़ दिया। वक्त बीतता चला गया, सुनील काम-धंधा छोड़ शराब ठेका में पड़ा रहता। जुए-शराब की लत ने इसे नक्कारा, कामचोर और बेईमान बना दिया। जैसे लोहे को जंग खा जाती है, वैसी ही सुनील को उनकी बुरी आदतों ने लील लिया।

सुमति बेबाक, मेहनती, निडर स्त्री थी। सुनील को शराब में डुबा देख बच्चों के भविष्य के लिए घर से बाहर काम पर निकली। बिमला, रमेश, शांति, गुड़िया, सुमति के सहकर्मी एवं गमसाथी थी। सभी एक ही गाँव के थे एवं साथ में पढ़े थे। सुमति अपना दुखड़ा इन्हीं लोगों को सुनाती और आँसू बहाती। सुनील एकदम सा बदल जाएगा, पता नहीं था। रमेश बोला।

अरे! जब से वह बाहर शहर में कमाने गया तब से बिगड़ गया। गुड़िया कही।

सही बोली..... जिस वजह से उसे काम से निकाला गया, यहाँ आकर भी वही धंधा करने लगा। बिमला बोली।

शराब जुए बहुत खराब चीज है। शांति कही।

हाँ......... सभी ने हामी भरी।

सुमति अपने बेटे अमन जो डेढ़ साल का है, उसे पीठ पर बाँधती और बेटी सुनीता 3 वर्ष की है, वह गाँव के प्राथमिक विद्यालय जाती है। सुमति अपने काम पर नित्य दिन जाती है। घर आकर बच्चों को संभालती और पढ़ाती। सुनील शराब के नशे में धूत होकर कोने पर पड़ा रहता है।

सुमति खदान में कोयला तोड़ रही थी और निकाल रही थी। शाम 5 बजे छुट्टी का सायरन बजा और सभी खदान से निकलने लगे। चलो सुमति..... बिमला बोली।

तू चल मैं आती हूँ। सुमति कही। जल्दी आ....... कहकर गुड़िया, बिमला सभी निकले। एक जोरदार हथौड़ी कोयला पर मारी। तभी हरीश ठेकेदार वहाँ आ पहुँचा। मालिक आप यहाँ...... सुमति बोली।

सुमति के सुन्दर, सुडौल शरीर उसकी सोने की आभा सी दमकती यौवन पर कायल था, उसकी बेबाकी अंदाज का दीवाना था। हरीश ऊँचे कद का, बदन हीस्ट-पुष्ट एवं कद्दावर आदमी था। हरीश सुमति से जोर-जबरदस्ती करने लगा, वह सुमति के दोनों हाथों को पकड़कर खदान की दीवार पर सटा दिया और हरीश का चेहरा सुमति के गालों से बिल्कुल इंच भर दूर था तभी सुमति अपने घुटनों से हरीश के दोनों टांगों के बीच जोर से मारी। हरीश लड़खड़ाते हुए गिर गया। सुमति अपने हाथ से साड़ी की आँचल को सीने से दबाए भागी। सुमति को भागते आते देख..... क्या हुआ.... बिमला कही।

डरी-सहमी सुमति हाँफते हुए बोली....... हरीश मेरे साथ जोर-जबरदस्ती की और रोती हुई अपने बेटे को गुड़िया की गोद से लिया और घर की ओर दौड़ती चली गई।

बहुत हरामी है....... साला, शांति ने कही।

हम पहले ही बोले थे कि गंदी नजर है साले..... की। बिमला कही।

यह खबर पूरे गाँव में आग की तरह फैल गयी। सब जानकर भी गाँव के लोग और सुमति बेबस, लाचार थी, क्योंकि ठेकेदार हरीश की पहुँच पुलिस, नेता, मंत्री, अफसर तक थी। अगली सुबह सभी काम पर जाने के लिए सुमति का इंतजार करने लगे, लेकिन वो नहीं आयी। अंततः सभी काम पर चले गए। सुमति के साथ बहुत बुरा हुआ। रमेश बोला।

हाँ....... सही में, बहुत बुरा हुआ, ऐसा कभी नहीं सोचा था। शांति बोली।

वो..... देखो...... हरामी हरीश कैसे सीना चौड़ा करके चल रहा है, जैसे कोई जंग जीत लिया हो। बिमला बोली।

शाम को काम से छूटते ही सभी सुमति के घर पहुँचे। देखा घर का दरवाजा आधा खुला है, अंदर जाकर देखा तो दो-चार बर्तनों के अलावा वहाँ कोई नहीं था। सभी एक-दूसरे को देखने लगे, सभी चिंतित और मन में एक ही प्रश्न उभर कर आ रहा था कहाँ..... गयी सुमति?

गाँव में हल्ला हो गया.... सुमति घर में नहीं है। सभी गाँव के जंगलों एवं अन्य स्थानों पर ढूँढने लगे। रात से सुबह हो गई लेकिन कहीं भी सुमति का पता नहीं चला।

सभी को ये लगा कि हरीश की करतूतों की वजह से सुमति गाँव छोड़ दी या उसे कुछ हो गया या हरीश ने मरवा दिया। इस घटना के महीना भर हो गया.... सुमति का कोई पता नहीं चला। देखते-देखते साल बीतता चला गया। दो साल बाद सुनील भी मर गया। कहते हैं दारू पीने की वजह से उसकी दोनों किडनी खराब हो गई थी।

घटना के सात साल बाद एक दिन अचानक पूरे गाँव में यह खबर फैल गई कि हरीश ठेकेदार का कोयला खदान बिक गया। कोई मुम्बई की कंपनी पूरे खदान को खरीद लिया है। सुनने में ये भी आ रहा है कि वहाँ के पुराने लोगों को हटाकर नये लोगों की भर्ती करेगा और अब मशीन द्वारा काम होगा। अब क्या होगा? हमारे गाँव के काम करने वालों का।

बच्चों की पढ़ाई-लिखाई अब कैसे होगी? गुड़िया बोली।

काम से हटा दिया जाएगा तो जीवन कैसे बसर होगा? रमेश कहा।

बच्चों की परवरिश अब कैसे होगी? शांति कही।

गाँव के लोग तो आधा महीना खेती करते और बाकी महीना खदान पर काम करके जीवन-यापन करते थे, खदान से हटा दिया तो बहुत से लोग बेरोजगार, बेकार हो जाएंगे। रमेश बोला।

हमारे जीवन में जैसे पहाड़ ही टूट पड़ा। बिमला कही।

सुनने में आया है कि कोई सुनैना नाम की कंपनी खदान को खरीदी है। रमेश ने कहा।

सुनैना..... नयी कंपनी लगती है, पहले कभी नहीं सुनी। बिमला कही।

गाँव में एक दिन पांच-छः गाड़ियों का काफिला घुसा और गाँव के सभी लोग काफिले के पीछे दौड़ने लगे। ये काफिला खदान के पास आकर रूकी। गाड़ी के पास लोगों की काफी भीड़ जमा हो गई, सभी ये जानना चाह रहे थे कि ये लोग कौन है? गाड़ी से उतरे सभी लोग सूट-बूट में थे। कोट-टाई पहने थे। भीड़ में रमेश, गुड़िया, बिमला, शांति गाँव के मुखिया सुरेश के अलावे ठेकेदार हरीश भी था। लो..... आ...... गए खदान के नए मालिक। हरीश बोला।

सूट-बूट में से एक आदमी कहा - हम..... सुनैना कम्पनी से आए हैं और खदान हमारी कंपनी की मालकिन सुनैना मैडम ने खरीदी है। हमलोग इस जगह और खदान का मुआयना करने, जरूरी कागजात को पूरा करने आए हैं। इस खदान में काम लगभग एक-डेढ़ महीने में शुरू हो जाएगा। नए मशीनों के साथ। सभी शांत एवं गंभीर होकर सुन रहे थे।

नए मशीन आ जाए तो हम गरीब मजदूर का क्या होगा? शांति कही।

नए मशीन आ जाने से हम जैसे अनेक मजदूर को हटा दीजिएगा.... सर। रमेश बोला।

हमें काम से निकाल दिया जाएगा तो हम कहाँ जायेंगे?

गुड़िया बोली। यह खदान हमारे अरमान, उम्मीदों, ख्वाहिशों को जिंदा रखने का जरिया है। बिमला बोली।

ये सारी बातें हम नहीं जानते। सारा फैसला हमारी सुनैना मैडम लेती है, वो जैसे आदेश देती है, हम बस उनके आदेश का पालन करते हैं। हम..... तो केवल उनके गुलाम हैं, नौकर हैं। सूट-बूट वाला आदमी कहा।

उनलोगों के जाते ही सारा गाँव में सन्नाटा पसर गया। सभी उदास एवं मायूस हो गए। अब क्या होगा? गुड़िया बोली।

क्या होगा..... वही शहर जाकर काम करेंगे। रमेश बोला।

गाँव, घर परिवार को छोड़कर...... बिमली कही?

तभी बिमला के फोन की घंटी बजी। कोई अननॉन नम्बर था बिमला फोन उठाई और उधर आवाज आई..... हम सुनैना कंपनी से बोल रहे हैं, आपलोगों से हमारी मैडम मिलना चाहती है। आप सभी को कल मुम्बई आना होगा। आने का सारा इंतजाम कर दिया गया है। कल सुबह 8 बजे हमारा आदमी आपलोगों को लेने आ जाएगा। फोन कट गई। कौन था...... क्या बोल रहा था...... सभी एक स्वर में बोले।

गंभीर होकर बिमला सारी बात बतायी। बिमला, रमेश, शांति, गुड़िया सभी पहली बार हवाई जहाज में बैठे थे, सभी खुश एवं डरे हुए थे। हवाई जहाज से उतरकर वे लोग गाड़ी में बैठे और गाड़ी लगभग 1 घंटे बाद एक बड़े विशाल आलीशान महल जैसे बंगले के बड़े से गेट के अंदर घुसा उन्हें बंगले तक पहुँचने में 10 मिनट लग गए। गाड़ी में बैठे सभी लोग बाहर की बड़े-बड़े पेड़, हरी-हरी घास, रंग-बिरंगे फूल, पौधे को आश्चर्यचकित होकर देख रहे थे। ऐसा दृश्य फिल्मों में देखा था।

गाड़ी से उतरकर सभी के दिमाग में एक ही प्रश्न था - ये हमसे क्यों मिलना चाहती है?

आदमी सभी को बंगले के अंदर ले जाता है। अंदर कदम रखते ही सभी बंगले की खूबसूरती को देखते रह गए। वहाँ रखे मोर, बाघ, चीता की मूर्तियाँ, ऊपर एक बहुत बड़ी-सी सोने जैसी चमचमाती झालर, लम्बी सीढ़ियाँ ऐसा दृश्य सभी को रोमांचित कर रहा था। सभी को सपने जैसे लग रहा था।

मैडम आती है, आप सभी यहाँ बैठ जाइए..... आदमी बोला।

वे लोग बैठते नहीं...... वे सभी दीवार पर लगी खूबसूरत पेंटिंग को देखने लगते हैं, तभी सूट-बूट में आया आदमी बोला...... हमारी सुनैना कंपनी की मालकिन सुनैना मैडम आ गई और सभी दीवार में लगी पेंटिंग देख रहे पीछे से सामने की ओर पलटते हैं...... देखते ही सभी के मुँह से एक ही स्वर निकलता है...... सुमति।

****